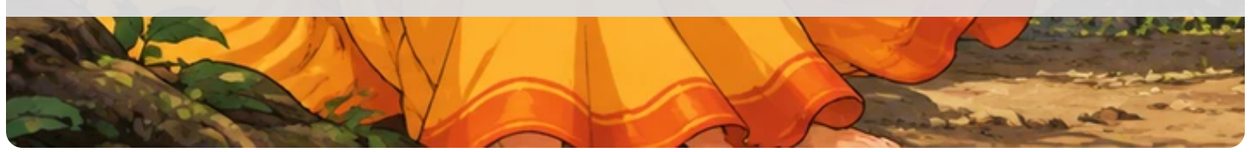
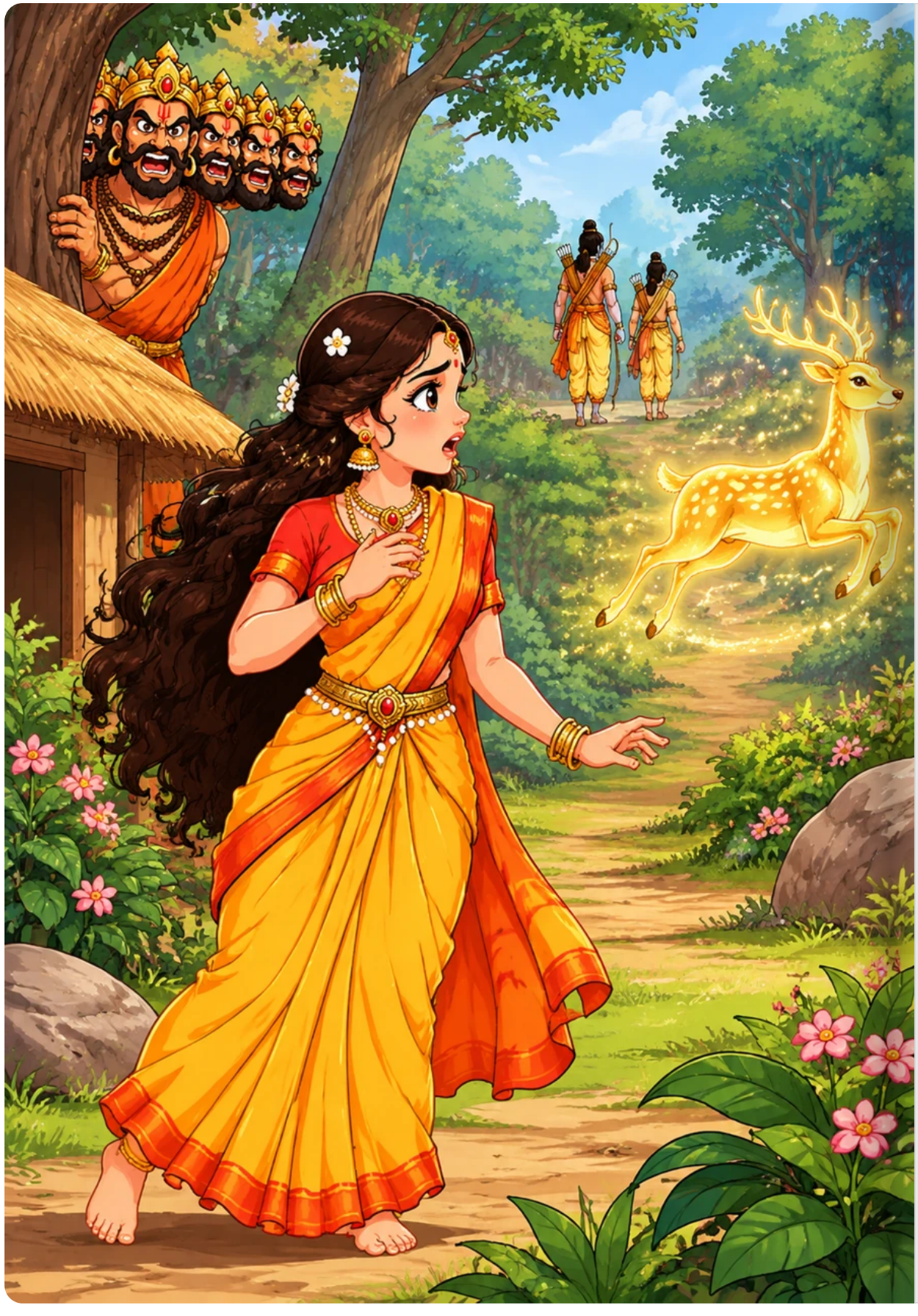


सीता हरण: कर्तव्य और त्याग की गाथा

Pammi Prem





पंचवटी के शांत वन में स्वर्ण मृग की माया ने सबका ध्यान आकर्षित किया। श्रीराम और लक्ष्मण कुटिया से दूर जा चुके थे, और माता सीता अकेली थीं।



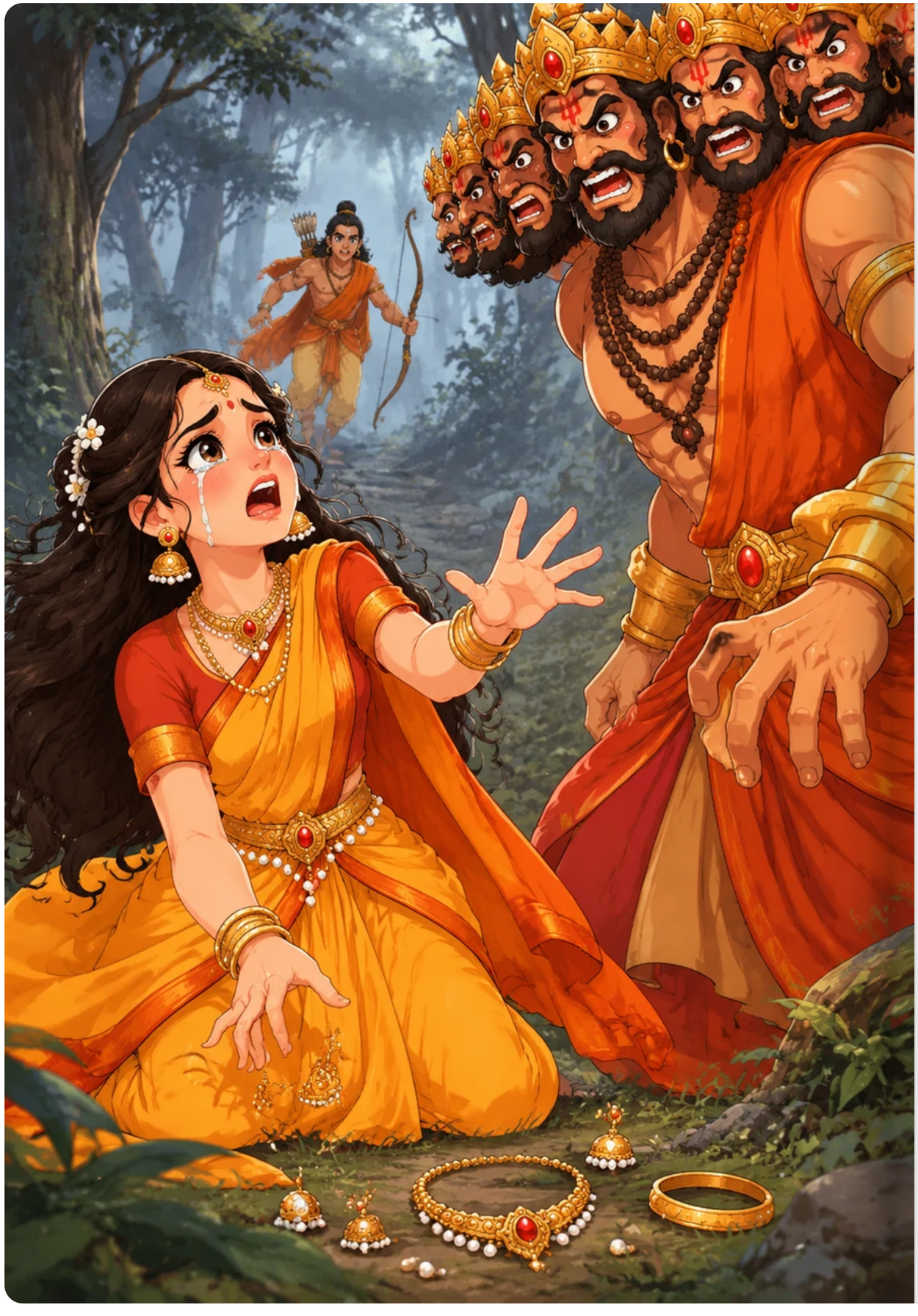
कुटी के द्वार पर एक भिक्षुक के वेश में रावण उपस्थित हुआ। उस
अपनी अलौकिक शक्तियों और चालाकी से माता सीता की परीक्षा लेन
चाही।



रावण ने अपने कपटपूर्ण साधु रूप को त्यागकर अपना वास्तविक भयानक रूप धारण कर लिया। उसके दस सिर और बीस भुजाएं आकाश में भय का वातावरण बनाने लगे।



क्रोध और अहंकार से भरे रावण ने माता सीता को बलपूर्वक पक
लिया। वह उन्हें अपने साथ ले जाने के लिए आकाश मार्ग की ओर बढ़
लगा।



माता सीता ने व्याकुल होकर अपनी रक्षा के लिए पुकार लगाई और अपने आभूषण नीचे गिरा दिए। उनका यह रुदन सुनकर पूरा वन जैसे शोक में डूब गया।



संकट की इस घड़ी में वीर पक्षी जटायु ने रावण के मार्ग को रो
लिया। उसने माता सीता की रक्षा के लिए राक्षसराज से भीषण युद्ध क
का निर्णय लिया।



जटायु ने अपने तीखे पंजों और विशाल पंखों से रावण को कड़ी चुनौती दी। दोनों के बीच हुआ यह संघर्ष आकाश में वीरता की एक अन् मिसाल बन गया।



अहंकारी रावण ने अपनी तलवार से वीर जटायु के पंख काट दिए
घायल होकर वह महान पक्षी धरती पर गिर पड़ा, परंतु उसने अपने प्राण
की बाजी लगा दी।



जटायु के आहत होने के बाद रावण माता सीता को जबरन अपन

पुष्पक विमान में बैठाकर लंका की ओर उड़ चला। माता सीता का विल

करुण स्वर में गूंज उठा।



मार्ग में माता सीता ने अपने आभूषणों के तिनके और पोटली नीचे बिखेर दी, ताकि श्रीराम उनके मार्ग का पता लगा सकें।